टपरी : भ्रमण

Duration : 04.42 **Transcribed words :** 894

- संगीत -

00.08 सौरभ बापना : जैसे कि आप देख सकते हैं कि ये कैफे का, जो हमारा टपरी है, उसका फेस है... और आप इसको ऐसे भी विवरण कर सकते हैं, ये हमारी गाड़ी का स्टेयरिंग वाला जो पार्ट है, यहीं से गाडी चलती है... सारी चाय की, जितनी भी प्रकार की चाय हैं, आप देख सकते हैं, पूरा हमने, दोनों तरफ डिस्पले में कर रखा है... मिल्क टीज़, नॉन मिल्क टीज़... किला स्टाईल में वो है हमारा ये पूरा... जो काउंटर हमने बना रखा है इसमें पारले जी, रखा है...

00.30 अंकित बोहरा : चाय की पत्ती है...

00.30 सौरभ बापना : चाय की पत्ती रखी हुई है... प्लस जो हमारी रिटेल करते हैं, जो हमारी टी एससेरीज हैं... आप भले ही केतली कह लीजिये... कप्स कह दीजिये, या ये टी स्टैंड कह दीजिये, हम लोग सब यहीं से डिसप्ले करते हैं बिकॉज जो हमारा कस्टमर इन्टरैक्शन होता है वो यहीं से होता है...

00.45 अंकित बोहरा : सारे दोस्त, दोस्ती दुश्मनी...

00.47 सौरभ बापना : यहीं पर निकलती हैं...

00.49 अंकित बोहरा : सब यहीं होती हैं... जैसे कि हम देखते हैं कितनी बार यहाँ पर लोग आते हैं जो बातें करते हैं आपस में, कि साला चाय पीने से काले होते हैं, वो होते हैं... तो उसी को सोच के हमने एक ये बना दिया, डायरी बना दी, कि चाय पीने से काले होते हैं और

फेयर एण्ड लवली से गोरे होते हैं... तो काफी कुछ चीजें यहीं, यहीं, कस्टमरर्स से ही ले के, उनसे ही एब्सार्ब करके हम लोग आगे एस्कटेंड करते हैं...

01.11 संगीत...

0.13 अंकित बोहराः ये जो रूम है, ये रूम पूरा उसका है, रंगों का, ख़्यालों का, इमैजिनेशन्स का...

01.18 संगीत...

01.33 अंकित बोहरा : आप देखेंगे तो ऊपर ये सीलिंग जो है, ये कैन्वास है... अगर आपने किसी एक चाय की दुकान को ऑब्जर्ब किया होगा तो काफी दुकानें ऐसी भी होती हैं जिसमें खाली चार डंडे होते हैं और एक, ऊपर एक कैन्वास टाईप, या एक कोई रफ़ कपड़ा टाईप टंगा हुआ होता है... तो उसी चीज को एक्सटेंड किया है... जैसे कि जितनी भी चीजें आप देख रहे हैं ये सब एक खयाल से बनी हैं... हर चीज... जैसे कि आप देखेंगे कि आज, ये एक मग है... और इस मग में जो ये एक प्रिंट है, ये एक पेड़, एक पेड़ है जिसके बहुत अलग अलग रंग के पत्ते हैं... जो इस रूम की आईडेंटिटी है... अगर आप देखेंगे, हर जगह कलर्स हैं... तो ये उसी चीज को एक्सटेंड करता है... उसी तरीके से सारी चीजें... जैसे कि आज ये है... मतलब जो एक चाय की दुकान वाला होगा, तो वो कुछ ऐसा ही झोला अपने साथ ले के घूमेगा... तो वो ही चीज हम लोगों ने बनाई है और उसको हम लोगों ने सेल पे रखा है... काफी लोगों को ये चीज, जो हम लोगों को ये सर्व करते हैं, पसंद आती है... अब ये हम लोग अगर खाली एल्यूमीनियम की रखते या मात्र खाली, तो उसको हमने आगे कपड़े पहनाये... कुछ रंग चढ़ाये... बोरी बांधी, रंग... और उसको हम लोग रिटेल करते हैं... आप ये देखें एक, इसको हम बोलते हैं चाय बार... लकड़ी को ना ही हमने पॉलिश करी है, उसको वैसा का वैसा रहने दिया है... जो एक टिपिकल सा, एक बिल्कुल बेसिक सा, एक पेटी बनाई है... उस पेटी के अंदर आप देखें तो आज ये वुडन का छीका है... छः ग्लासिज हैं... पीतल की केतली है, डब्बा है... और ये ऐसा बन्द हो जाता है... इसके पीछे एक खुब्बी है... आप चाहें तो इसको अपने किचन में टाँग सकते हैं...

03.13 अंकित बोहरा : जो आप लकडी का फर्नीचर देख रहे हैं, ये जो केन है, केन बहुत ही, एक, एक आप देखें तो पुरानी सभ्यता रही है हमारी... जो केन की, जो हमारे कारीगर रहे हैं वो हाथ से उसको बुन के... तो उसी चीज को हम लोगों ने कनवीनियेंस के लिये लकडी के अंदर पिरोया है... जो आप सोफे देख रहे हैं, ये सोफे में भी सारे रंग बिरंगे और ख़याल, और एक ऐलीसेंस वंडरलैंड या कोई एक ब्रिटिश, उन चीजों को उतारने की कोशिश करी है...

03.46 अंकित बोहरा : जो यहाँ पर लोग आये हैं वो कोई नया कनवरसेशन करें, या कुछ कवररसेशन इनीशियेट हो, उसके लिये हम लोगों ने हमने हैंड ब्लॉक प्रिंट या काफी, ऐसा काफी चीजें रखी हुई हैं ताकि लोग उनको देखें और उसके बारे में बात स्टार्ट करें...

03.56 अंकित बोहरा : ये जो पूरी वॉल है, ये हमेशा पूरी चेंज होती रहेगी... अभी हमने यहाँ पर एक हिन्दुस्तान टाईम्स के फोटोग्राफर हैं, हिमांशु जी, उनका हमने आस्ट्रेलिया का वर्क एग्जिबिट कर रखा है... इस वॉल का इन्टेंशन ये है कि ये वॉल हमेशा बदलती रहे और हमेशा कोई नई कहानी, कोई नया रंग बताये...

04.15 अंकित बोहरा : आप अगर कभी किसी एक चाय की दुकान को ऑब्जर्ब करेंगे तो आप उसमें पायेंगे कि एक, जो चाय वाला है, इसकी सोच बड़ी अनोखी है... तो उसी चाय वाले की सोच को एप्रीशियेट करते हुये, समझते हुये हमने उसी चीज को एक्सटेंड किया है... टपरी के अंदर सब उसी तरह की चीजों का इस्तेमाल किया गया है... जो छत आप देख रहे हैं, जो पत्थर आप देख रहे हैं, जो लकड़ी आप देख रहे हैं, जो परदे आप देख रहे हैं, या जितनी भी चीजें हैं, हमने उसी सोच पे स्थापित करी हैं...